संदर्भ ग्रंथ–सूची

संदर्भ ग्रंथ - सूची

(अ) आधार ग्रंथ

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
1.	मिश्र गोविन्द	पाँच आँगनों वाला घर	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. दरियागंज, 7/31, अंसारी रोड, नई दिल्ली। पहला संस्करण : 2005

(आ) संदर्भ ग्रंथ

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
1.	अग्रवाल विजयकुमार	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में सामन्ती जीवन	विक्रम प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण : 1990
2.	Katherin Lever	The Novel and The Reader	London, Mathuen & Co. Ltd. : 1961
3.	तिवारी (डॉ.) रामजी	छटपटाती नैतिक की कथा 'पाँच आँगनों वाला घर' सं.डॉ.उर्मिला शिरीष	मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति हिन्दी भवन, श्यामला हिल्स, भोपाल. प्रथम संस्करण : 2000
4.	त्रिपाठी (डॉ.) सरोजनी	आधुनिक हिन्दी उपन्यास में वस्तु विन्यास	आराधना प्रेस, कानपुर संस्करण : 12 मई 1973
5.	प्रेमशंकर (डॉ.)	मोहभंग का दारूण दस्तावेज	साक्षात्कार, जनवरी 1999
6.	बांदिवडेकर (डॉ.) चन्द्रकान्त	गोविन्द मिश्र : सृजन के आयाम	वाणी प्रकाशन, 4697/5, 21 ए, अंसारी मार्ग, दरिया गंज, नई दिल्ली

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
7.	मटियानी (डॉ.) शैलेश	कहानी लिखने का सिद्धांत और गोविन्द मिश्र की कहानियाँ	मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति हिन्दी भवन, भोपाल
8.	महिप (डॉ.) सिंह	हिन्दी उपन्यास समकालीन परिदृश्य	क्षितिज प्रकाशन, 568 शांतिनगर, बम्बई - 71
9.	माचवे (डॉ.) प्रभाकर	जेनेंद्र के विचार	
10.	मिश्र (डॉ.) गोविन्द	लेखक की जमीन	साहित्य भण्डार, 50 चाहचन्द इलाहाबाद. संस्करण : 1980
11.	मुद्गल (डॉ.) शंकर वसंत	हिन्दी के महाकाव्यात्मक उपन्यासों की शिल्पविधि	चन्द्रलोक प्रकाशन, 128/106, जी ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर : 1994
12.	मेहता (डॉ.) आशा	विचार प्रधान उपन्यास में कथ्य और शिल्प	भारती ग्रंथ निकेतन, 27/3, कुचा चेलान, दरियागंज नई दिल्ली : 1997
13.	सत्यपाल (डॉ.)चुघ	अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्प-विधी	दिल्ली पुस्तक सदन, 16 यु.पी., दिल्ली - 7
14.	सिंह (डॉ.) त्रिभुवन	हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग	हिन्दी प्रचारक संस्थान पो.बॉ.नं. 106, पिशाचमोचन वाराणसी. प्रथम संस्करण : 1973
15.	शर्मा (डॉ.) कुसुम	साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास विविध प्रयोग	

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
16.	शिरीष (डॉ.) उर्मिला	सृजन यात्रा : गोविन्द मिश्र	मध्यप्रदेश रा.प्र.स. हिन्दी भवन, श्यामला हिल्स, भोपाल. प्रथम संस्करण : 2000

(इ) शब्द कोश

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
17.	Oxford	Oxford Dictionary of Current English	
18.	नालन्दा विशाल शब्दसागर	नालन्दा विशाल शब्द सागर	आदर्श बुक डिपो, 7/ए, डब्ल्यू इ.ए.कसॉल बाग, नई दिल्ली 110 005
19.	मानक हिन्दी शब्द कोश	मानक हिन्दी शब्द कोश	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
20.	शब्द कोश	बृहत् हिन्दी शब्द कोश	
21.	हिन्दी शब्दकोश	हिन्दी शब्द कोश	राजपाल एंड सन्स, कश्मिरी गेट, नई दिल्ली.

(ई) पत्र

अ.क्र.	लेखक का नाम	तिथि
22.	गोविन्द मिश्र जी से प्राप्त पत्र	24.8.2006
23.	वही	17.3.2007

(उ) सी.डी.

24. शिवाजी विश्वविद्यालय और महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर से प्राप्त संभाषण और साक्षात्कार।

10-9-2005

परिशिष्ट

गोविन्द मिश्र

म.न. ९४
ई-७ [illegible] कॉलोनी
भोपाल - ४६२०१६

२५-८-०६

प्रिय मीनाक्षी जी,

आपका पत्र मिला। आपके शोध-प्रबंध के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। आपके प्रश्नों के उत्तर नीचे दे रहा हूँ।

1) 'पाँच आँगनों ...' के लिखने की प्रेरणा -

यह उपन्यास मेरे एक [illegible] साथी - जो [illegible] में मेरे सहपाठी थे, अब तक मित्र हैं - [illegible] उनके [illegible] से मिली। [illegible] यह उन्हीं के परिवार की कहानी है जो [illegible] के थे।

2) पाँच आँगनों का उद्देश्य -

पाँच आँगनों की कल्पना [illegible] .. यथार्थ के पीछे, उस समय के संयुक्त परिवार की भौतिक और मानसिक सम्पन्नता की ओर [illegible] इशारा है। हर आँगन एक [illegible] के लिए है और इनका मिलन एक [illegible] है। कोई बड़ा सा परिवार के [illegible] है जो [illegible] - [illegible]। वहाँ से निकलते - निकलते सामान्य का जीवन एक [illegible] में कैद हो जाता है जहाँ वह अपने बड़े भाई को भी नहीं ला पाता। यह [illegible] है।

3) [illegible] बीच में शायद [illegible] अन्तराल के रूप में प्रस्तुत हैं। पाठक से अपेक्षा है कि वह कल्पना कर ले ... कि वे [illegible] उस बीच गुज़र गये।

(4) ~~काल्पनिक~~ व्यावहारिक नहीं है।

(5) ~~क्योंकि~~ यह वांछित करने के लिए शास्त्र में संयुक्त परीक्षाएँ और उनके साथ आये हुए [illegible] का विश्लेषण कैसे हुआ।

उपयोगी नाटक के लिए एक छोटी-सी समीक्षा भी भेज रहा हूँ। समीक्षक हैं, डॉ. प्रेमशंकर जो सागर विश्वविद्यालय में हैड थे। अगर आप पी. एच. डी. कर रही होतीं तो उपन्यास की सभी समीक्षाएँ सामने प्रस्तुत [illegible] देता।

मैं आपके विश्वविद्यालय, [illegible] कहाँ [illegible] भिजवाऊँगा।

सस्नेह

गोविन्द मिश्र

गोविन्द मिश्र

MX-94
E-7 अरेरा कॉलोनी
भोपाल - 462016

14-3-07

प्रिय मीनाक्षी जी,

नमस्कार।

आपका पत्र मिला। आपके शोध सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं

(1) मैंने वह घर देखा तो नहीं लेकिन अपने मित्र मिश्रजी के जीवन पर आधारित यह कथा है, उनसे उनके विस्तृत विवरण सुने हैं। उन्हीं के आधार पर उपन्यास में लिखा है। साहित्य में वर्णित यथार्थ हू-ब-हू जीवन के यथार्थ जैसा नहीं होता। अब तो जो यथार्थ है वह भी उपन्यास का यथार्थ है। अच्छा हो अगर आप उपन्यास में घर के वर्णनों के आधार पर स्वयं एक नक्शा बना लें। यह आपकी शोध में आपका अनूठा प्रयोग बनेगा।

(2) प्रेम में असफल होने के बाद .... शेष जीवन जीते समय मनुष्य की प्रेम के प्रति क्या धारणा होती है?

यह व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर होता है। कुछ प्रेम से जीवन भर परहेज रखने का सोचने लगते हैं, कुछ पुराने प्रेम के दर्द को तत्काल नये प्रेम से लेप डालना चाहते हैं, कुछ आत्महत्या तक कर लेते हैं।

मैंने दर्द को सहा, फिर उसे अपने भीतर आदर से बिठाया। उसने मुझे साहित्य में लगाया। उसके बाद जीवन चल पड़ा।

(3) आधुनिक जीवन शैली में वहां तक तो ठीक कि समय के अनुसार रीति-रिवाज, बातचीत, वेशभूषा आदि में परिवर्तन हो ... लेकिन रुपये को ही सब कुछ मान लेना गलत है। रुपया महत्वपूर्ण है, उसके लिए प्रयत्न करना चाहिए ... लेकिन वही सबकुछ नहीं है। मनुष्य का सभी जीवों के प्रति प्रेम-करुणा मुख्य है।

(4) जातियों के सम्बन्ध में तो हमारे शास्त्रों ने ही बता दिया गया, जन्मना

जायते शूद्रः, कर्मणा ब्राह्मण उच्यते'। हर व्यक्ति जन्म से शूद्र पैदा होता है, कर्मों से ब्राह्मण बनता है। जाति को लेकर किसी के बारे में कोई धारणा बना लेना ग़लत है।

इसी तरह धर्म भी... जब वह व्यक्ति के मन पर होता है तो आदमी में जीवन-शक्ति का संचार करता है। जब सम्प्रदाय, संस्थान या किसी संगठन के हाथ होता है तो दुराग्रह और धर्मान्धता में बदल जाता है।

(5) आदमी न व्यक्ति पद/या कुर्सी के कारण बड़ा बनता है। साहित्यकार में अपने काम के कारण बड़ा बनता है... उसी तरह उसका कृतित्व बड़ा बनता है। जब आदमी का मन भी हमेशा मैंने अपने साहित्यकार को बड़ा माना। ऐसे से ऊपर यदि मुझे अपने साहित्यकार होने पर से जीया लगता था। आज भी।

आप जो आत्मीयता महसूस करती हैं, इसके लिए आभार। यह आपके शोध-लेखन को लेकर धन्यवाद। हार्दिक शुभकामनाएँ।

हस्ताक्षर इस पत्र के नीचे दे रहा हूँ। फोटो संलग्न है।

सस्नेह

गोविन्द मिश्र

गोविन्द मिश्र

डा. मीनाक्षी आवटे
न्यू कालेज - कोल्हापुर